❁ 14 सितम्बर 2014 (14-12-78) की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] सेकण्ड में स्वयं का स्वरूप अर्थात् आत्मिक ज्योति स्वरूप और कर्म में निमित्त भाव का स्वरूप- यह डबल लाइट स्वरूप सेकण्ड में हाई जम्प दिलाने वाला है। लेकिन बच्चे क्या करते हैं? हाई जम्प के बजाए पत्थर तोड़ने लग पड़ते हैं। हटाने लग जाते हैं। जिस कारण जो भी रथ शक्ति हिम्मत और हुल्लास है वह उसी में ही खत्म कर देते और थक जाते हैं वा दिलशिकस्त हो जाते हैं। जब ऐसी मेहनत बच्चों की देखते तो बापदादा को भी तरस पड़ता है। जम्प लगाओ और सेकण्ड में पार हो जाओ यह भूल जाते हैं। तो आज यह रूह-रूहाण हो रही थी कि बच्चे क्या करते और बापदादा क्या कहते। सहज मार्ग को थोड़ी सी विस्मृति के कारण इतना मुश्किल कर देते जो स्वयं ही थक जाते हैं।

2] निश्चयबुद्धि की पहली निशानी क्या है? निश्चयबुद्धि अर्थात् सदा निश्चिंत। जब बाप ने आपकी सब चिंतायें अपने ऊपर ले ली फिर आप क्यों चिंता करते हो। विनाश हो न हो वा कब होगा, यह चिंता ब्राह्मण जीवन में क्यों?

3] समर्थ संकल्पों रूपी फलों का भोग लगाना– समझा कौन सा भोग लगाना है।

4] थोड़े में राज़ी कौन होते हैं? भक्त।.....भक्त नहीं लेकिन अधिकारी बनो। भक्त आत्मा जब तक ब्राह्मण न बने तब तक स्वर्ग में नहीं आ सकते, भक्त से ब्राह्मण बनना पड़े, फिर ब्राह्मण से देवता बने। भक्त-पन का अंशमात्र भी न हो- इसको कहा जाता है सम्पूर्ण अधिकारी।

5] ''कृपा करो, आशीर्वाद करो, शक्ति दो, क्या करूँ, कैसे करूँ कोई रास्ता दो, हमारे पास माया को न भेजो'' - यह कमजोरी है ना। महावीर कहे दुश्मन न आये और मैं महावीर हूँ, तो उसको क्या कहेंगे? महावी तो दुश्मन का आवाह्न करते हैं कि आओ और हम विजयी बनें। महावीर पेपर को देख घबरायेंगे नहीं, चैलेन्ज करेंगे क्योंकि त्रिकालदर्शी होने के कारण जानते हैं कि हम कल्प-कल्प के विजयी हैं।

6] जो स्वयं को परमात्म प्यार के पीछे कुर्बान करते हैं, सफलता उनके गले की माला बन जाती है।

✺ योग-

1] – – –

✺ धारणा-

1] ऐसे व्यर्थ संकल्पों का तूफान रच स्वयं को ही डगमग करते हैं। अपने निश्चय के फाउण्डेशन को हिला देते हैं। जैसे तूफान कहाँ पहुंचा देता है– वैसे यह व्यर्थ संकल्पों का तूफान तीव्र पुरूषार्थ से पुरूषार्थ तरफ ले आता है। **ऐसे तूफानों में मत आओ**– बापदादा ऐसे बच्चों से पूछते हैं कि क्या अब तक भी ट्रस्टी हो वा गृहस्थी हो? जब ट्रस्टी हो तो जिम्मेवार कौन? आप वा बाप? जब बाप जिम्मेवार है तो होगा या नहीं होगा, क्या होगा यह बाप की जिम्मेवारी है वा आपकी है?

2] सुख के दिनों में धीरज धरो। कब और क्यों के अधीर्य में मत आओ। अपने ही व्यर्थ संकल्पों के तूफान समाप्त करो, सम्पत्तिवान बनो, समर्थीवान बनो। सदा निश्चयबुद्धि। कल्याणकारी बाप और कल्याणकारी समय का हर सेकण्ड लाभ उठाओ।

...2

3] सारे कल्प में ऐसे सम्पत्तिवान, भाग्यवान दिन, भाग्य विधाता के संग के दिन फिर नहीं आने वाले हैं। विनाश के समय भी यह प्राप्ति का समय याद करेंगे इसलिए ड्रामा अनुसार कल्याण अर्थ जो ड्रामा का दृश्य चल रहा है उसको त्रिकालदर्शी बन, हिम्मत और हुल्लास वाली समर्थ आत्मायें बन, स्वयं भी समर्थ रहो और विश्व को भी समर्थ बनाओ। पत्थर तोड़ने में थको मत, स्वयं के तूफान में हिलो मत, अचल बनो। समझा। करते क्या हो और करना क्या है? यही रूह-रूहाण बापदादा की हुई कि बच्चे क्या खेल करते हैं ! अब समर्थी का खेल खेलो जिससे यह सब खेल समाप्त हो जाएं।

4] परोपकारी बनो। परोपकारी से विश्व उपकारी बन जायेंगे।

5] जैसे निमित्त आत्मायें होती हैं, वैसे वायुमण्डल भी बनता है, स्वयं सहयोगी हैं तो आने वाली आत्माओं को भी सहयोगी बना देती। स्वयं उलझन में होंगे तो आने वाली आत्माओं में भी वही वायब्रेशन फैलाते हैं। तो निमित्त आत्माओं को सदा निर्विघ्न एक बाप की लगन में मगन रहने वाले, इसी स्थिति में रहना है।

6] अव्यक्त फरिश्ता बनना है तो व्यर्थ बोल जो किसी को भी अच्छे नहीं लगते हैं उन्हें सदा के लिए समाप्त करो। बात होती है दो शब्दों की लेकिन उसे लम्बा करके बोलते रहना, यह भी व्यर्थ है। जो चार शब्दों में काम हो सकता है वो 12-15 शब्दों में नहीं बोलो। कम बोलो- धीरे बोलो..... यह स्लोगन गले में डालकर रखो। व्यर्थ वा डिस्टर्ब करने वाले बोल से मुक्त बनो तो अव्यक्त फरिश्ता बनने में बहुत मदद मिलेगी।

✺ **सेवा-**

1] साधन बहुत आकर्षण वाला है, साधन का पूरा लाभ उठाओ, सबमें आवाज फैल जाये। मेहनत करने से फल जरूर निकलेगा।